

चार गतियों में भ्रमण के कारण व निवारण

जैसा कि आपको पहले बताया है कि कोई भी आत्मा, जब तक कि वह पूर्ण (Completely) रूप से कर्मों से मुक्त नहीं हो जाती वह 4 गतियों, (नरक, तिर्यच, मनुष्य व देवगति) में भ्रमण करती रहती है।

A नरक की स्थिति:

1. नरक में दुःख ही दुःख हैं। यहां की धरती का स्पर्श ऐसा है मानो हजारों बिछुओं ने एक साथ काट लिया हो।
2. नरक में प्यास बुझाने के लिये न पानी है और न ही भूख के लिए अनाज है।
3. नरक में गर्मी और सर्दी दोनों ही अत्यधिक होती है।
4. वहां पर शरीर के पारे (Mercury) की तरह टूकड़े-2 होते रहते हैं।

नरक में जाने के मुख्य कारण

1. महाहिंसा (Excessive Violence): क्रूर (Cruel) बनकर पशु, पक्षी या मनुष्यों की अत्यधिक हिंसा करना। इस संसार में प्रत्येक प्राणी को अपना जीवन प्यारा है। इसलिए अपने सुख व शौक के लिए दूसरे जीवों को मारना, नरक के station का Ticket Reserve कराने के समान है। मांस-मदिरा का प्रयोग भी इसमें शामिल है। हमें भ. की वाणी याद रखनी चाहिए, Live & Let Live। अतः आज हमें निम्नलिखित प्रतिज्ञा (Oath) लेनी चाहिए (नरक में जाने से बचने के लिए)।

- 1) Be a vegetarian through out the life.
- 2) In any hotel, before ordering I will check that food is vegetarian.
- 3) To buy & eat the items having green dots.
- 4) Will not use any beauty product that are made of animals being.

2. महापरिग्रह (Unlimited Acquisitions): नरक में जाने का दूसरा मुख्य कारण महा-परिग्रह है। अतः हमें निरर्थक धन, जमीन, कपड़े, जूते, जेवर आदि का संग्रह (Collection) नहीं करना चाहिए। हमें जितनी जरूरत है उतना ही रखना चाहिए। बाकी गरीबों को दान देना चाहिए।

3. माँसाहार: माँसाहार भी नरक बंध का कारण है, इससे हमारा दया भाव समाप्त हो जाता है।

4. पंचेन्द्रिय वध: हमें नरक में जाने से बचने के लिए पंचेन्द्रिय वध नहीं करना चाहिए।



B तिर्यच की स्थिति:

तिर्यच के जीव भी दुःख ही उठाते रहते हैं। पशु-पक्षी, जीव-जन्तु, पानी अग्नि आदि सभी तिर्यच कहलाते हैं। तिर्यच से बचने के मुख्य 2 उपाय हैं। हमें 2 बुराईयों से बचना होगा (1) कपट (Deceit) (2) झूठ (Lie)

1. कपट: When we are not true to our thoughts, speech or actions, we are indulging in deceit, यानि जिस मनुष्य के सोचने में, बोलने में या करने में फर्क होता है वह कपटी कहलाता है।

2. झूठ: झूठ बोलने से भी जीव नरक में जाता है। झूठ सभी समझते कि क्या होती है। सच नहीं बोलकर जब अन्य कुछ बोलते हैं तो वह झूठ है। जैसे आप झूठा खाना नहीं खाना चाहते वैसे ही आपकी झूठ को कोई भी स्वीकार नहीं करना चाहता है। अतः हमें कभी भी हँसी मजाक या गुस्से में, लालच के कारण, भय के कारण, दूसरों को नीचा (Humiliate) दिखाने के लिए झूठ नहीं बोलना चाहिए।

C मनुष्य गति:

हम सभी मनुष्य गति के जीव हैं। अगर हमें मनुष्य जन्म ही पाना है तो अपने जीवन में 4 चीजों को करना होगा।

- (1) दया करने से (By Practising Compassion)।
- (2) सरल बनने से (By Practising Simplicity)।
- (3) विनम्र होने से (By Practising Humility)।
- (4) इर्ष्या नहीं करने से (By Avoiding Jealously)।

D देवगति:

देवगति में जीव सुख भोगता है। यहां दुःख नहीं होता है। देवगति प्राप्त करने के कुछ उपाय।

- (1) साधु बनकर और 5 महाव्रतों का पालन करने से।
- (2) श्रावक बनकर और श्रावक के 12 व्रतों का पालन करने से।
- (3) उपवास, आयम्बिल, एकासना तप आदि करने से।

श्रावक के 12 व्रत

मुख्यव्रत (5)	गुणव्रत (3)	शिक्षा व्रत (4)
♦ अहिंसा अणुव्रत	♦ दिशा परिमाण	♦ सामायिक
♦ सत्य अणुव्रत	♦ भोगोपभोग परिमाण	♦ देशावगासिक
♦ अचौर्य अणुव्रत	♦ अनर्थदंड विरमण	♦ पौषध
♦ ब्रह्मचर्य अणुव्रत		♦ अतिथि संविभाग
♦ अपरिग्रह अणुव्रत		

जैसा कि पहले बताया है कि भ. महावीर ने मोक्ष प्राप्त करने के 2 मार्ग बताए हैं। एक है साधुमार्ग और दूसरा है श्रावक मार्ग। भ. ने कहा कि यदि हम कुछ व्रत या नियमों का पालन करते हुए अपना जीवन चलाएंगे तो हम गृहस्थ Worldly Life में रहकर भी अपना कल्याण कर सकते हैं। इन व्रतों व नियमों को श्रावक के 12 व्रतों के नाम से जाना जाता है। इन 12 व्रतों को भी 3 Category में बांटा गया है। जैसा कि ऊपर दर्शाया गया है। पहले 5 मुख्यव्रत हैं जो कि साधुओं के व्रतों का ही Small रूप हैं। इसमें हमें बहुत सारी Exceptions होती हैं, जबकि साधुओं के लिए इन व्रतों में कोई Exceptions नहीं होती हैं। बाकी के व्रत इन 5 व्रतों की Support व Help के लिए हैं। अब हम इन व्रतों को परिभाषित करते हैं।

1. अहिंसा अणुव्रत: इस व्रत में हम प्रतिज्ञा (Vow) लेते हैं कि हम किसी भी जीव को जिसने कोई अपराध नहीं किया है, उसे हम जान बुझकर नहीं मारेंगे और न ही किसी को मारने की लिए कहेंगे। (यहां पर भगवान् ने हमें अपना जीवन निर्वाह करने के लिए एकेन्द्रिय जीवों— जैसे भोजन के लिए वनस्पतिकाय आदि के जीवों की हिंसा की छूट दी है) परन्तु यहां पर भी हमें यह ध्यान रखना चाहिए कि एकेन्द्रिय जीवों (पृथ्वी, पानी, अग्नि, वायु, वनस्पति) की भी अनावश्यक हिंसा न हो। वह भी कम से कम हो। हमें हमेशा यह ध्यान रखना चाहिए कि वे भी हमारे जैसे जीव हैं और उनकी हिंसा से उन्हें भी वेदना होती है। इस व्रत के पालन हेतु हम अलग से एक पाठ अनावश्यक हिंसा के नाम से आगे दे रहे हैं उसे भी आप समझें।

2. सत्य अणुव्रत: हमें ऐसा असत्य (Lie) नहीं बोलना चाहिए जिससे सामने वाले को किसी प्रकार की पीड़ा या कष्ट हो। हमें अपने हर Action में Truth का पालन करना चाहिए।

3. अस्तेय अणुव्रत: अस्तेय का अर्थ है कि बिना Permission के किसी की भी



वस्तु को लेना या उठाना। अतः हमें ऐसी चोरी आदि नहीं करनी, जिससे हमारी निन्दा हो या बदनामी हो और Punishment मिलने का भय हो।

4. ब्रह्मचर्य अणुव्रतः इस व्रत का अर्थ है, शादी से पूर्व पूर्ण Celibacy का पालन करना और शादी के बाद अपनी Wife या Husband के सिवाय किसी अन्य से कोई भी Illicit Relation नहीं रखना। और न ही किसी अन्य को कामुकता की दृष्टि से देखना।

5. अपरिग्रह अणुव्रतः इस का अर्थ है कि हमें कम से कम परिग्रह (Possession) रखना चाहिए। जैसे Ornaments, Houses, Money, Clothes etc. हमें यह सब Limit में रखने चाहिए। हमें जितनी आवश्यकता हो उतना ही हम रखें, बाकी हमें गरीबों की सहायता में लगाना चाहिए। इस व्रत का पालन करने से समाज में समानता भी आती है और गरीब लोगों का जीवन स्तर भी ऊँचा उठता है।

6. दिशा-परिमाण व्रतः इस व्रत में हम Different Directions में जाने की Limit बना लेते हैं। इसका Purpose यही है कि जैसा कि हम जानते हैं कि हम जितना अधिक घूमेंगे-फिरेगें उतना ही अधिक पाप कार्यों में संलग्न रहने की सम्भावना रहती है। अतः हम अपने को एक सीमा में रखकर पापों को कम कर लेते हैं।

7. भागोपभोग परिमाण व्रतः इस व्रत में हम ऐसे व्यापारों (Businesses) का त्याग करते हैं, जिसमें ज्यादा हिंसा होती हो और भोजन, वस्त्र एवं उपयोग में लाने वाली वस्तुओं की Limit करते हैं।

8. अनर्थ दंड-विरमण व्रतः इसमें हम Purposeless हिंसा का त्याग करते हैं।

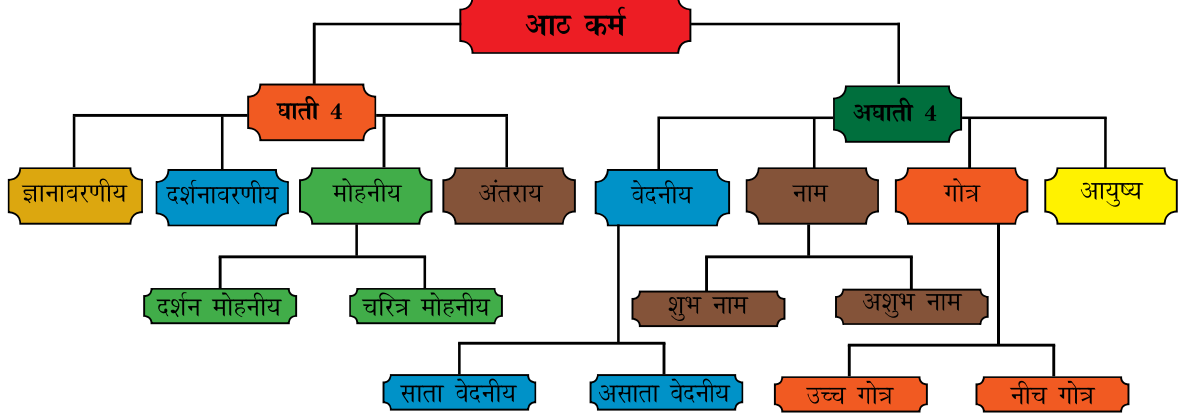
9. सामायिक व्रतः जैसा कि पहले बताया जा चुका है कि जैन दर्शन में मोक्ष प्राप्ति के लिए सामायिक एक बहुत बड़ा साधन है, अतः श्रावक को 48 मिनट के लिए एक सामायिक अवश्य करनी चाहिए

10. देशावकाशिक व्रतः इस व्रत में हम कुछ समय के लिए अपने नियमों की सीमा को अधिक Tight कर देते हैं। जैसे आपने देखा होगा कि हाकी या फुटबाल के Match में वैसे तो खिलाड़ी पूरे मैदान में खेलते हैं, परन्तु जब Penalty Corner लगाना होता है तो सारे खिलाड़ी गोल Post की तरफ आ जाते हैं, और Playing Area बहुत Tight हो जाता है, ये ही स्थिति इस व्रत की है।

11. पौषध व्रतः इस व्रत के अंतर्गत हम 24 घंटे के लिए कुछ भी नहीं खाते हैं और धर्म-स्थान या एकान्त वास में रहकर, ससार की सभी पाप क्रियाओं से मुक्ति पाकर साधु की तरह जीवन जीते हैं।

12. अतिथि संविभाग व्रतः इस व्रत के अंतर्गत हम किसी भी सुपात्र को निर्दोष दान देने की भावना रखते हैं।

आठ कर्म



जीव के दो भेद हैं— सिद्ध और संसारी। ये दो भेद कर्मों के कारण हैं। सिद्ध जीव सर्व कर्मों से रहित होने से शाश्वत मोक्ष में विराजमान हैं। संसारी जीव आठ कर्मों से बंधे हैं। जैसे सूर्य पर बादल छा जाते हैं, दीवार पर रोगन चिपक जाता है और चिकने शरीर पर धूलि जम जाती है, उसी प्रकार यह जीवात्मा कर्मरूपी आवरण से ढक जाती है। कर्म अपने स्वभाव के अनुसार जीव को विभिन्न फल देते हैं।

जीव-आत्मा को कर्म करने व उसका फल भोगने के लिए शरीर के माध्यम की जरूरत होती है। शरीर में स्थित मन-वचन-काया रूपी तीन योगों के स्पन्दन (हलचल) से कर्मरूपी धूली आत्मा-प्रदेशों की तरफ आकृष्ट होती है और राग-द्वेष का बल पाकर वह आत्मा से चिपक जाती है। निश्चित समय आने पर कर्म आत्मा को शुभ-अशुभ फल देते हैं।

आत्मा के आठ गुण हैं- 1. अनन्त ज्ञान, 2. अनन्त दर्शन, 3. अव्याबाध (बाधा-रहित) सुख, 4. क्षायिक सम्यक्त्व, 5. अटल अवगाहना, 6. अमूर्तता, 7. अगुरुलघु भाव, 8. अनन्त बल।



इनका आवरण करने वाले कर्म भी क्रमशः आठ हैं- 1. ज्ञानावरणीय, 2. दर्शनावरणीय, 3. वेदनीय, 4. मोहनीय, 5. आयु 6. नाम, 7. गोत्र, 8. अन्तराय। इनका संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है-

1. ज्ञानावरणीय कर्म- आत्मा अनन्त ज्ञान का पुंज है। यह कर्म आत्मा के ज्ञान-गुण (विशेष



ज्ञान) पर पर्दा डालता है। इसका स्वभाव आंखों पर बंधी पट्टी के समान है।

2. दर्शनावरणीय कर्म- यह आत्मा के दर्शन-गुण (सामान्य ज्ञान) को रोकता है। इसका स्वभाव राजा का दर्शन रोकने वाले द्वारपाल के तुल्य है। नींद भी इसी कर्म के उदय से आती है।

3. वेदनीय कर्म- यह आत्मा को भौतिक सुख-दुख प्रदान करता है। इसका स्वभाव शहद से लिपटी हुई तलवार के समान है। पहले शहद का मजा, फिर जीभ कटने का दुःख। ऐसे ही सांसारिक सुख-भोग हैं।

4. मोहनीय कर्म- यह आत्मा के स्वरूप-दर्शन और स्वरूप-प्राप्ति में बाधा डालता है। सम्यक् श्रद्धा को रोकता है और चारित्र्य-प्राप्ति नहीं होने देता। इसका स्वभाव मदिरा के समान है। मिथ्यात्व, चार कषाय, विषय-वासना सब इसी के कारण हैं। यह सारे कर्मों का सेनापति है।

5. आयु कर्म- आत्मा स्वभाव से अजर-अमर है, किन्तु इस कर्म के कारण आत्मा शरीर-रूपी में जन्मती-मरती है। इसके होने से ही शरीर जीवित रहता है और इसके समाप्त होने से मृत्यु हो जाती है। इसका स्वभाव कारागार (जेल) के समान है।

6. नाम कर्म- यह आत्मा को अनेक प्रकार के शरीर, इन्द्रिय, अंगोपांग, संस्थान (आकार) वर्ण आदि प्रदान करता है। इसका स्वभाव चित्रकार के तुल्य है।

7. गोत्र कर्म- यह आत्मा को ऊंचे, नीचे अनेकविध कुलों में जन्म दिलाता है। इसका स्वभाव कुम्हार के समान है। कुम्हार अच्छे बुरे दोनों प्रकार के घड़े बनाता है, ऐसे ही यह कर्म है।

8. अन्तराय कर्म- यह आत्मा की दान, लाभ, भोग, उपभोग और बल-रूप शक्तियों में बाधा डालता है। इसका स्वभाव राज-भण्डारी (खजांची) के तुल्य है।

इन आठ कर्मों में ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, मोहनीय और अन्तराय, ये चार कर्म आत्मा के मूल गुणों का घात करते हैं, इसलिए ये घाती कर्म कहलाते हैं। इनको नष्ट करने के उपरान्त केवल-ज्ञान की प्राप्ति होती है। शेष चार कर्म अघाती हैं। ये शरीर से सम्बन्ध रखते हैं। ये केवल-ज्ञान होने में बाधा नहीं डालते। केवली भगवान की आयु पूरी होने पर ये चारों स्वतः समाप्त हो जाते हैं।